मध्यकाल

एक पुनर्मूल्यांकन

संपादक
धनंजय कुमार दुबे

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

प्रकाशक
श्री नटराज प्रकाशन
ए-507/12, साउथ गांधी एक्स.
दिल्ली-110053
फोन : 011-22941694
Email : shreenatrajprakashan@gmail.com

ISBN : 978-93-86113-24-5

© लेखक

प्रथम संस्करण : 2017

मूल्य : 695.00 रुपये

शब्द संयोजन : श्री नटराज प्रकाशन, दिल्ली-110053

मुद्रक : पूजा ऑफसेट प्रेस, दिल्ली-110091

भारत में मुद्रितः MADHYAKAL : EK PUNARMULYANKAN by
Dr.Dhananjai Kumar Dubey, Dr. ShashiKumar 'Shashikant'

श्री नटराज प्रकाशन, ए-507/12, साउथ गांधी एक्स. दिल्ली-110053 से टी.एस. राघव द्वारा प्रकाशित, श्री नटराज प्रकाशन द्वारा पृष्ठ सज्जा, भास्कर लाल कर्ण द्वारा आवरण सज्जा तथा पूजा ऑफसेट प्रेस, दिल्ली-110091 द्वारा मुद्रित।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

मध्यकाल : एक पुनर्मूल्यांकन, सं. अनंजय दुबे
श्री नटराज प्रकाशन, दिल्ली, 2017
ISBN: 978-93-86113-24-5 Self Attested

नामवर सिंह का भक्ति विमर्श वाया दूसरी परम्परा

कवितेन्द्र इन्दु

भक्ति आन्दोलन की विविध व्याख्याएं मौजूद हैं। हर बड़े आलोचक ने भक्ति पर कुछ न कुछ कहा है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल से लेकर आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी और डॉ. रामविलास शर्मा तक ने भक्ति आन्दोलन के उदय, उसकी व्याप्ति और प्रभाव के सन्दर्भ में अपने मतों को प्रस्तुत किया है। इसी कड़ी में डॉ. नामवर सिंह ने भी अपनी पुस्तक दूसरी परम्परा की खोज के जरिये भक्ति आन्दोलन सम्बंधी विवेचन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इस आलेख में डॉ. नामवर सिंह की इस पुस्तक के कुछ ऐसे पहलुओं की चर्चा की जाएगी जिनको लेकर अध्येताओं और आलोचकों के बीच भ्रम की सी स्थिति है।

दूसरी या लघु परंपराओं की धारणा समाजशास्त्र के लिये नई नहीं है, लेकिन हिंदी में दूसरी परंपरा की खोज का ऐतिहासिक महत्व है, इसके पहले हिंदी में केवल (एक) परंपरा की चर्चा होती थी। नामवरजी ने दूसरी परंपरा की धारणा के जरिये इस बात को दोबारा याद दिलाया कि वर्चस्व की प्रक्रिया के समानांतर प्रतिरोध की प्रक्रिया भी इतिहास में चलती रहती है, भले ही वह प्रभावशाली रूप न धारण कर सके। उन्होंने इस बात को भी रेखांकित किया कि प्रगतिशील परंपरा को प्रतिरोध की परंपरा के साथ जोड़ा जाना चाहिए। हिंदी आलोचना में दूसरी परंपरा की खोज को लेकर जो विवाद हुआ वह इसके सैद्धांतिक महत्व के कारण नहीं था, विवाद का कारण था पहली परंपरा के निरूपण को दी जाने वाली चुनौती। आचार्य शुक्ल की तथाकथित परंपरा को प्रतिक्रियावादी सिद्ध करते हुए नामवरजी ने द्विवेदीजी की एक अलग परंपरा निरूपित की। परंपरा की इस खोज का एक ऐतिहासिक संदर्भ है। द्विवेदीजी को जीवन काल में रूढ़िवादियों के हमले तो झेलने पड़े ही थे, 1979 में उनकी मृत्यु के बाद प्रगतिशीलों ने भी उनका अवमूल्यन किया। नामवरजी ने किसी प्रगतिशील

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner